सच्चाई से मेहनत करने पर भी इस संसार में   फूककर लोग बुराई में अच्छाई की जीत की   चलता रहा कोई भी दवाई सूट नहीं कर रहा

हिन्दी दिवस विशेषांक: ड़ ढ़ श्र को अड़ा अढ़ा श्र पढ़ें

पूरे विश्व के भाषा परिवार को चार भागों में विभक्त करने पर एक भाग यूरेशिया आता है. इसे नौ खण्डों ड्ढ हैमेटिक-सेमेटिक, काकेशियन, यूराल-अल्टाइक, चीनी, द्रविड़, आस्ट्रो-एशियाटिक, जापानी-कोरियाई, मलय-पालिनेशियन और भारोपीय में विभाजित करने से एक भाषा परिवार भारोपीय का आता है. भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत भारत और यूरोप में बोले जाने वाली भाषाएँ आती हैं. इसके दस भेद - केल्टिक, इटैलिक, जर्मनिक, ग्रीक, हित्ती, तोखारी, इलीरियन, बाल्टिक, स्लाव और भारत-ईरानी होते हैं. भारत-ईरानी के तीन भेद के रूप में ईरानी, दरद और भारतीय आर्य भाषा का नाम आता है. भारतीय आर्य भाषा के क्रमिक विकास में पहला रूप प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का है. इसका समय 1500 ई.पू. से 500 ई. पू. रहा है. इस अवधि में भाषा के रूप में वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत रही है. वैदिक संस्कृत में वेदों की रचना हुई. लौकिक संस्कृत में महाभारत और रामायण की रचना हुई. भाषा की यह विशेषता रही है कि जब ड्ढ जब कोई भाषा पूरी तरह साहित्यिक हो जाती है और व्याकरणिक नियमों में जकड़ दी जाती है, तब वह आम जनता के लिए दुरूह हो जाती है; फिर जनता अपनी सुविधा के लिए अपेक्षाकृत सरल भाषा की खोज करती है. भाषा हमेशा कठिन से सरल की ओर चलती है, क्योंकि लोगों को सरलता और सुविधा पसंद होती है. सरल भाषा की ओर चलते हुए अगली कड़ी में, हम मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के युग में प्रवेश करते हैं. इसका काल 500 ई.पू. से 1000 ई. तक है. इसके क्रमिक विकास में तीन भाषाएँ आती हैं- प्रथमत: ड्ढ पाली, इसे प्रथम प्राकृत भी कहते हैं. इसकी अवधि 500 वर्षों की रही, अर्थात 500 ई.पू. से 1 तक. द्वितीय भाषा के रूप में प्राकृत आती है, इसे द्वितीय प्राकृत कहते हैं, इसका समय 1 से 500 ई. तक रहा है. तृतीय भाषा के रूप में अपभ्रंश, इसे तृतीय प्राकृत कहते हैं, इसका समय 500 ई. से 1000 ई. तक रहा है. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा में प्रत्येक की अवधि 500-500 वर्षों की रही है. अंतिम भाषा अपभ्रंश के सात भेद रहे हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्द्ध मागधी, मागधी, टक्क-केकय, ब्राचड़ और खस. इसमें से शौरसेनी के तीन भेद पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती हुए. पश्चिमी हिन्दी के कुल नौ भेद ड्ढ ब्रजभाषा, बांगरू, खड़ी बोली, हरयानी, कन्नौजी, बुन्देली, ताजुज्बेकी, कौरवी, निमाड़ी में से खड़ी बोली ही आज की हमारी हिन्दी है. इसी का आज दिवस है. इसके इतिहास को हर हिंदी भाषी नागरिक को जानने का अधिकार है.

लेखक- डॉ. रमेश टंडन,
विभागाध्यक्ष हिंदी
महाविद्यालय खरसिया

हिंदी दिवस के अवसर पर आज हम कुछ रोचक जानकारी से परिचित होंगे, तभी आज का दिवस सार्थक हो सकेगा. हिंदी की लिपि देवनागरी है. यह आक्षरिक होती है. अंग्रेजी की लिपि रोमन होती है, यह वार्णिक होती है. अर्थात ए, बी, सी से लेकर जेड तक सभी वर्ण हैं. परन्तु हिंदी के पूरे 52 अक्षर कहलाते हैं. उदाहरण के लिए, कमल शब्द में तीन अक्षर हैं, जबकि इसी को रोमन लिपि में लिखने पर के ए एम ए एल लिखा जाएगा, ये सभी वर्ण हैं, न कि अक्षर. यहाँ क अक्षर के लिए के और ए दो वर्ण आए. इस प्रकार अंग्रेजी के ए, बी, सी... आदि को वर्णमाला कहते हैं. हिंदी के अ, आ... क, ख, ग..... को अक्षर कहते हैं, इसलिए इसकी सूची को अक्षरमाला कहेंगे, जबकि अंग्रेजी के अनुरूप इसे भी वर्णमाला कह देते हैं, जो अनुचित है.

देवनागरी लिपि की हिन्दी में शिरोरेखा का विधान होता है, अर्थात प्रत्येक शब्दों के ऊपर एक लकीर खींची जाती है. इसमें खड़ी पाई का भी विधान होता है, अर्थात इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ध, र, ह, ड़, ढ़ आदि को छोड़ दें तो शेष सभी अक्षरों में खड़ी पाई लगायी जाती है. इसीलिए कुछ विद्वानों के मतानुसार हिंदी खड़ी बोली है. अन्य ध्यान देने योग्य यह बात भी है कि हिंदी अक्षरमाला के अध्यापन में एक त्रुटियाँ अक्सर शिक्षकों से होती है. जब मैं एम ए हिंदी के छात्रों को अक्षरमाला का लगातार उच्चारण करने बोलता हूँ तो ये बात सामने आती है कि लगभग नब्बे प्रतिशत से अधिक छात्र अंतिम अक्षर के पूर्व दो अक्षरों का गलत उच्चारण करते हैं. गलती छात्रों की नहीं है. दरअसल, उन्हें प्राथमिक शाला के शिक्षकों ने ही गलत उच्चारण सिखाया है. जिसके कारण उन दो अक्षरों को छात्र ऐसा उच्चारण करने लगते हैं ड्ढ अड़ी पढ़ी श्र, अड़ा पढ़ा श्र, अड़ा बढ़ा श्र, अड़ी अढ़ा श्र आदि, जबकि इसके स्थान पर ड़ ढ़ श्र को अड़ा अढ़ा श्र पढ़ा जाना चाहिए. हम सब शिक्षित पाठकों को यह करना चाहिए कि हम अपने-अपने गाँव की प्राथमिक शाला जाएँ और शिक्षकों को सही उच्चारण के साथ बच्चों को पढ़ाने का अनुरोध करें. इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं, जो ध्यान देने योग्य है, जिन्हें हम अनजाने में व्यवहार में त्रुटिपूर्ण प्रयोग करते हैं. खुद शिक्षक या जन प्रतिनिधि भाषण देते समय अंत में जय-हिन्द, जय-भारत बोलते हैं. इसे सुनकर छात्र भी यही बोलते हैं. जबकि यहाँ पुनरुक्ति दोष है. हिन्द का अर्थ भारत हुआ और भारत का अर्थ भी भारत हुआ. एक ही शब्द को दो बार कह दिया गया- जय-भारत, जय-भारत. अत: मेरा सुझाव यह है कि या तो जय-हिन्द कहें या जय-भारत कहें, दोनों नहीं. इसी प्रकार पाव रोटी बोलते हैं, जबकि पाव का अर्थ पुर्तगाली में रोटी होता है. पाव कहें या रोटी, दोनों नहीं. पाव रोटी कह देने से रोटी रोटी अर्थ हुआ. रोटी शब्द दो बार आया. यहाँ भी पुनरुक्ति दोष आ गया. लोग अक्सर यहाँ भी गलती कर बैठते हैं. उदाहरण के लिए, कलकत्ता भारत की राजधानी था, के स्थान पर कलकत्ता भारत की राजधानी थी बोलते हैं. जबकि कलकत्ता शब्द के पुल्लिंग होने के कारण सहायक क्रिया था होगी, थी नहीं. अत: हिंदी की सही जानकारी के लिए हिंदी के अच्छे लेखकों की गद्य कृति को ध्यान से पढ़ना चाहिए, जैसे प्रेमचंद का गोदान उपन्यास या अन्य. अच्छे अभिनेता जैसे कादर खान के हिंदी डायलाग को भी ध्यान से सुना जा सकता है.